इमाम आज़म –

विशालता व महानता

इमाम आज़म- कुरान आयत व हदीस बुखारी की बशारत के योग्य

फिक़्ह तथा तखलीद से संबंध अनिवार्य विस्तार के बाद हम इमाम आइमा, सिराज अल्लामा, इमाम आज़म अबु हनीफा हज़रत नुअमान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु प्रतिष्ठा व प्रतिभा तथा आप कि ज्ञानी व फिक़्ही का वर्णन है।

शअबान में इमाम आज़म के प्रिय देहान्त का महीना है, इस संदर्भ से आप का वर्णन किया जाता है। आप का जन्म 61 हिज्री या 70 या 80 हिज्री में हुआ। तथा पावन देहान्त 2 शअबान 150 हिज्री में हुआ।

सहीह बुखारी, सहीह मुसलिम, जामे तिर्मिज़ी आदि व किताब हदीस पाक में है के जब सुरह जुमआ कि प्रारंभ कि आयात करीमा का प्रकट हुआ जिस में आदेश हैः-

भाषांतरः वही शान वाला खुदा है जिस ने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल को उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है तथा उन्हें किबात एवं हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, यद्यपि इस से पूर्व तो वे खुली गमुराही में पड़े हुए थे। एवं उन दूसरे लोगों को भी (किताब और हिकमत की शिक्षा दे) जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, वे उन्हीं में से होंगे। और वही प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी हैं।

(सुरह अल जुमअ़ाः 62:2/3)

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा- मैं हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम से निवेद कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम! वह (बाद में आने वाले कौन हैं जिन पर आप आयत कि तिलावत फरमाएंगे तथा इन के नफ्स का वर्णन तथा किताब व हिकमत कि शिक्षा फमाएंगे?) हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने उत्तर प्रदान नहीं किया, यहाँ तक के आप ने 3 बार पूछा। (हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं) इस समय हम में हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उपस्थित थे, हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने अपना पावन हाथ हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर रख कर आदेश फरमायाः यदि ईमान शुक्र ग्रह व नक्षत्र कि ऊँचाई पर भी हो तो इन में से कुछ लोग बल्कि एक ही व्यक्ति इसे वहाँ से भी प्राप्त करलेगा।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 4897)

हज़रत मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह ने ज़ुजाजातुल मसाबीह में इ़माम जलाल उद्दीन सुयूती शाफअ़ रहमतुल्लाहि अलैह कि तबीज़ुल ज़हफय से रिवायत वर्णत किया हैः-

भाषांतरः हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः वचन है इस जात कि जिस के वश में मेरी जान है! यदि धर्म शुक्र ग्रह व नक्षत्र पर भी उपलब्ध होता तो अबनाए फारस से एक व्यक्ति इस को पा लेता... इमाम हाफिज़ जलाल उद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं के यह हदीस पाक जिस को इ़माम बुखारी व मुसलिम ने रिवायत की है, असल सहीह है जिस के आधार में सम्पूर्ण आनन्द के साथ कहा जा सकता है के इस में इ़माम आज़म अबु हनीफा

रहमतुल्लाहि अलैह कि ओर इशारा है तथा इस के सहत पर सब का विश्वास व निश्चय है.....

इमाम सुयूती के विद्यार्थी अल्लामा शामी का विवरण हैः हमारे शेख का विश्वास है के इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही इस (हदीस) के मसदाख हैं जिस में किसी संदेह कि सम्भावना नहीं, क्यों के अहले फारस में आप जैसे ज्ञान व उच्च को कोई नहीं पहुँचा।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, किताबुल इल्म)

इमाम आज़म के शोध व अनुसंधान को इमाम जाफर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि निश्चय

हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रात अहले बैत किराम का अत्यन्त आदर व सम्मान किया करते तथा आप कि फिक़्ही शोध व अनुसंधान को अहले बैत किराम कि सहायता प्राप्त है।

भाषांतरः इमाम अबु यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं के एक बार हज़रत इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मसजिद हराम में बैठे हुए थे, लोग आते एवं मसाइल पूछते तथा आप उत्तर देते जाते थे, इतने में हज़रत इमाम जअफर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वहाँ प्रसिद्ध हुए तथा यह स्थिति डे हो कर दख रहे ते, जैसे ही हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि नज़र आप पर पड़ी, फिरासत से समझ गए के आप तशरीफ लाय हैं तो तुरंत खडे हो गए तथा निवेदन कियाः ऐ रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के राजकुमार ! यदि प्रथम से मुजे मालूम होता के आप यहाँ खडे हुए हैं तो मैं कभी नहीं बैठता। जब के आप खडे हों। इमाम जअफर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः आप तशरीफ रखें तथा लोगों को अहकाम बतलाएं, मैं ने अपने पूर्वजों को भी इसी स्थिति पर पाया है।

(अल जवाहिर अल मती--- फी तबखात अल हनफियह)

हज़रत शैक़ुल इस्लाम जामिया निज़ामिया के प्रवर्तक रहमतुल्लाहि अलैह ने इस घटना को विवरण करने के बाद व्याख्या किया के देखिए ! इ़माम साहिब जो उत्तर देते जाते वह सब मसाइ़ल फिक़्ही थे, जिन को पालन के अनुसार से सब मान रहे थे तथा इ़माम जअ़फर सादिख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी इस की निश्चय – की।

(हखीखह अल फिक़्ह, जिल्द 2, पः 49)

इ़माम आज़म के धन्य शिष्ठाचार

हज़रत इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जहाँ ज्ञान व फज़्ल में एकताए रोजगार हैं। कुरान व हदीस के ज्ञान व बोध के --- हैं, ऐसी उच्चता व कमाल पर आभूषण होने के साथ साथ उच्च सभ्यचार के पैकर थे।

हज़रत शैक़ुल इस्लाम जामिया निज़ामिया के प्रवर्तक रहमतुल्लाहि अलैह आप के उच्च शिष्ठाचार तथा उदारता व दानशीलता से संबंध एक घटना, इ़माम मौफुख तथा इ़माम क--- कि मनाखिब अल इमाम आज़म के हवाले से अनुवाद किया हैः-

हज़रत शखीख बलक़ी --- रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैं के एक बार मैं अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह के साथ किसी कि तबीयत पूछने को जा रहा था। रास्ते में एक व्यक्ति आप को देख कर छिप गया तथा दूसरे रास्ते से निकल जाना चाहा।

आप ने उस को पुकार कर कहाः दूसरे रास्ते से क्यों जाते हो? उस ने देखा के इ़माम साहब पहचान गए, लज्जित हो कर खडा हो गया, आप ने जब कारण पूछा तो उस ने कहा के मुझ पर आप के दस हजार दिरहम हैं।

तथा बावजूद अवधि गुज़र जाने के दरिद्रता के कारण से समापन ना कर सका इस लिए सामने आने से मुझे शर्म आई।

इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः सुभानल्लाह ! उन दिरहमों से छिपने कि नौबत पहुंच गई, वह सम्पूर्ण राशि मैं तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा तुम से यह निवेदन है के मेरी ओर से तुम्हारे हृदय पर जो गिरानी गुज़री वह तुम क्षमा कर दो।

(हखीखुल फिक़्ह, जिल्द 1, पः 299)

इ़माम आज़म और क़ुरान का सम्मान

इ़माम म—रहमतुल्लाहि अलैह, इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में क़ुरान पाक के सम्मान व आदर संबंधित एक घटना अनुवाद करते हैः-

भाषांतरः इ़मामुल आईमा ज़--- रहमतुल्लाहि अलैह ने इस घटना को --- वर्णित करते हुए फरमायाः इ़माम साहब के नंदन हज़रत हम्माद रहमतुल्लाहि अलैह ने जब सुरह फातिहा समाप्त की तो इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शिक्षक के पास हजार दिरहम उपहार भेजा। इ़माम – कहते हैं के इ़ब्न जबारह ने अपनी नामवर पुस्तक *अलकामिल* में लिखा है के नंदन के अध्यापक इ़माम आज़म कि सेवा में उपस्थित हुए तथा क्षमा चाही कहा के मैं ने कया किया जो इतने दिरहम मुझे दान किए गए? इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उत्तर दियाः आप ने जो मेरे लडके तो शिक्षा दी है कया इस को साधारण समझ रहे हो? अल्लाह का वचन ! यदि हमारे पास इस से अधिक भी होते तो क़ुरान के सम्मान व आदर के अनुसार से वह सब आप को प्रस्तुत कर देते।

(मनाखिब अल इ़माम आज़म लिल मौफिख, पः 256/257, हखीखह अल प जिल्द 1, पः 299)

इमाम आज़म- धर्मनिष्ठ व पवित्रता के पैकर

इमाम फक्रु उद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने तफसीर कबीर में इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह के ज़ुहद से संबंधित एक रिवायत अनुवाद किया हैः-

भाषांतरः रिवायत वर्णन की गई है के इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का किसी आग कि पूजा (मजूसी) करने वाले पर उधार था, आप इसे प्राप्त करने के लिए इस के गर तशरीफ ले गए, जब आप इस के घर के दरवाज़े पर पहुंचे तो आप के जूते पर अशुद्धता व अपवित्रता गिर गई, जब आप ने इसे अपने जूते से निकाला तो अपवित्रता का छींटा उडा और मजूसी के घर कि दीवार पर गिरा, तो इमाम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु चिंतित हो गए, तथा विचार किया के यदि मैं इसे ऐसे ही छोड दुँ तो यह इस आग कि पूजा करने वाले कि दीवार पर दोषी बना रहेगा, तथा यदि इसे खरीद कर निकाल दुँ तो दीवार कि मिठ्ठी गिर जाएगी। फिर आप ने दरवाज़े पर दस्तक दी, तो दासी बाहर आई, आप ने इस से कहाः अपने स्वामी से कहो के अबु हनीफा दरवाज़े पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तो वह व्यक्ति बाहर आया, इस ने विचार किया के आप इस से अपने उधार कि मांग करेंगे, वह माफी --- चाहने लगा, तो इमाम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः इस को तो रहने दो, इस से अधिक महत्व चीज़ मेरे सामने है फिर आप ने दीवार से संबंधित सारी घटना वर्णन की, तथा पूछा के दीवार को पवित्र करने कि कया क़ीमत है? मजूसी ने कहाः मैं प्रथम अपने आप को पवित्र व शुद्ध करनता हुँ, एवं वह इसी समय इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(अल तफसीरुल कबीर अल राज़ी, सुरह अल फातिहाः 07)

40 वर्ष इशां के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ का समापन

इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह इबादत का असाधारण प्रबंध करते, रात भर इबादत किया करते थे, कुरान करीम कि तिलावत कसरत व अधिकता से करते, अल्लाह तआला के दरबार में विनती व निवेदन करते, खतीब बग़दादी ने अपनी तारीक़ में लिखा हैः-

भाषांतरः हज़रत हम्माद बिन खुरैश ने फरमायाः मैं ने असद बिन उ़मर से यह कहते सुना के यह बात में बुद्धि में है के इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 40 वर्ष इशां कि नमाज़ के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ समापन करते, आप रात भर एक रकात में सम्पूर्ण कुरान करीम कि तलावत करते तथा रात में आप के रोने कि अवाज सुनाई देती यहाँ तक के पडोसियों को आप कि इस स्थिति पर दया आ जाती थी। इमाम आज़म के बारे में यह बात भी याद है के जिस स्थान पर आप का देहान्त हुआ वहाँ आप ने 7000 बार कुरान करीम समाप्त किया।

(तारीक़ बग़दादी लिल खतीब, अल बग़दादी, बाबुल नौन---, ज़िक्र मन अस मह अन नुअमान)

एक संदेह एवं इसका

40 वर्ष इमाम आज़म कि रात में इबादत के बारे में कुछ भाग से यह संदेह उत्पन्न होता है के यदि इमाम आज़म ने 40 वर्ष हर रात लगातार इबादत की है, इशां के वुज़ू से फज्र कि नमाज़ संपादन किया है तो फिर आप को औलाद नहीं होती थी।

इस संदेह व शक का --- करना अवश्य है। अल्लाह तआला के बन्दे 3 प्रकार के होते हैः-

(1)- कुछ तो वह हैं जो अपने नफ्स पर अत्याचार करते हैं।

(2)- कुछ बीच स्तर के भले लोग हैं जो अच्छे व भले कर्म करते रहते हैं।

(3)- तथा कुछ लोग वह होते हैं जो नेकियों व भलाई में सर्वप्रथम करने वाले, भलाई में पहल करने वाले हैं।

(सुरह अल फातिरः 32) ----

हज़रत इमाम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तीसरे प्रकार से हैं। आप भलाई व पुण्य में बहुत अधिक आगे रहने वाले हैं।

नेक व भला सेवक के गुण क़ुरान करीम कहता हैः-

भाषांतरः

(सुरह अल फुरखानः 64)

अल्लाह तआला अपने कलाम के द्वारा सूचना दे रहा है के मेरे भले व नेक सेवक ऐसे भी हैं जि कि रातें खियाम व सुजूद में गुज़रती है। कलाम इलाही कि सूचना है, घटने के विरुद्ध नहीं हो सकती।

इस से मालूम हुआ के रात-रात भर इबादत करना, भले सेवकों के गुण व लक्षण हैं तथा इमाम आज़म तो क़ैरात व उदारता करने वाले हैं। भलाई में सर्वप्रथम रहने वाले हैं।

अब रहा पत्नी के अधिकार के समापन तथा हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सुन्नत पर अ़मल करने का तो इस सिलसिले में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः

(सुरह अन नूरः 58)

इस आयत करीमा से मालूम होता है के परदे के 3 समय हैं। इन 3 विशेष काल में नाबालिग़ बच्चे भी आना चाहते हों तो उन के लिए भी आज्ञा ले कर आना अवश्य है। बिना आज्ञा आना जाइज़ नहीं।

उन 3 समय में दो समय का संबंध रात से है, आप ने नमाज़ इ़शां के बाद तथा फज्र से पूर्व इन दो समय को इबादत के लिए निश्चित – कर लिया था तथा ज़ोहर से पूर्व --- का समय भी सत्र के समय में शामिल है।

तो इस क़ुरानी अनुदेश व --- के आधार में पत्नी के अधिकार कि --- समापन तथा औलाद को प्राप्त के सिलसिले में जो --- किया गया वह अंत होता है। अर्थात बुज़ुर्गों के मामलात में इस प्रकार के गलत सोंच-विचार करना के वह एक नेक कार्य कर रहे हों तो उन से दुसरा गलत कर्म हो रहा होगा, सुधारता के योग्य कर्म है।

इस प्रकार के – से करना तथा इन मामलात में कुछ कहने से परहेज़ करना एवं अल्लाह तआ़ला का भय व खौफ रखना चाहिए।

30 वर्ष तक रोज़ों का प्रबंध

इ़माम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह दिन में रोज़े रखते थे एवं रात में विश्राम नहीं करते थे जैसा के तारीक़ बग़दादी में हैः-

भाषांतरः इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पोते हज़रत इसमाइ़ल बिन हम्माद अपने पिता हज़रत हम्माद बिन अबु हनीफा से वर्णित करते हैं जब मेरे पिता का देहान्त हुआ तो हम ने हज़रत हसन बिन अ़म्मारह रहमतुल्लाहि अलैह से निवेदन किया के वह पूज्य – पिता को स्नान दें, इन्हों ने यह विनती स्वीकार की। जब स्नान दिया तो यह कहाः अल्लाह आप पर रहम परमाए एवं आप के स्तर बुलंद करें, आप ने 30 वर्ष से रोज़ा नहीं छोडा और 40 वर्ष से आप के दाहिने हाथ ने रात में टेक नहीं लगाया। आप ने अपने बाद वालों के लिए कठिनाई वाले कार्य के द्वार खोल दियए तथा हुफ्फाज़ को पीछे छोड दिया।

(तारीक़ बग़दादी लिल खतीब अल बग़दादी, बाबुल नौन--, ज़िक्र मिन इसमह अन नुअ़मान)

हदीस के ज्ञान में इ़माम आज़म का स्थान

यह एक अयोग्य --- सच्चाई है के हज़रत इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जलीलुल खद्र --- कि रिवायत किया हुए हदीस शरीफ से हदीस के पुस्तकें मालामाल हैं।

इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के --- 4000 अध्यापक व शिक्षक हैं। आप को यह – प्राप्त है के आप के मान्य अध्यापक में जलीलुल खद्र सहाबा उपस्थित है। इसी प्रकार आप ने असंख्या ताबाईन से हदीस के ज्ञान व प्रज्ञानता को प्राप्त किया।

जैसा के अ़ल्लामा इ़ब्न आबेदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह ने रद्दुल मुहतार के – में उल्लेख किया है। (रद्दुल मुहतार, मुखदम्मा)

इ़माम बुक़ारी के 20

इ़माम बुक़ारी अलैहि रहमा ने सहीह बुखारी में 22 हदीस ऐसी विवरण हैं जिस में इ़माम बुक़ारी तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि

वसल्लम के बीच केवल 3 वास्ते हैं। यह इन के लिए एक विशाल कृपा कि बात है तथा इन में से 20 हदीस कि सनदों --- में इ़माम बुक़ारी के अध्यापक हनफी मुहद्दिसीन हैं।

हज़रत मक्की बिन इ़ब्राहीम हनफी मुहद्दिस हैं एवं इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के छात्र व विशेष हैं जिन से इ़माम बुक़ारी ने 11 सलासिल ली हैं तथा इ़माम अबु आ़सिम ज़हहाक बिन मुक़लद से 6 सलासियास तथा इ़माम मुहम्मद बिन अ़बदुल्लाह अन्सारी से 3 सलासियान रिवायत की है।

इन 20 सलासियान में इ़माम बुक़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के --- अध्यापक मुहद्दिसीन वह हैं जो इ़माम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विशेष छात्र हैं।

अर्थात इ़माम बुक़ारी ने इमाम आज़म के मुखल्लिद तथा अपने हनफी अध्यापकों पर गर्व किया है। क्यों के आप कि सनद – में यदि इन हनफी मुहद्दिसीन ना रहे तो आप के पास केवल दो सलासियान बाखी रह जाती है।

अधिक इमाम बुक़ारी ने सहीह बुखारी में 32 हनफी मुहद्दिसीन से रिवायात ली हैं जो --- इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैह के छात्र व --- फिक़्ही मसाइ़ल में आप के पालन व मुखल्लिद हैं।

इस से यह बात स्पष्ट होती है के फिक़्ह हफी वह द्वार व रास्ता है जिस को आईमा मुहद्दिसीन ने अपनाया है। जीवन भर --- हदीस कि सुरक्षा करने वालों ने जिन अनुसंधान व शोध को प्राप्त किया हो वह क्योंकर हदीस के विरुद्ध हो सकती हैं?

व्याख्या में इमाम आज़म का महत्व

इमाम मवखफ रहमतुल्लाहि अलैह ने इसमाइल बिन बिश्र के हवाले से लिखा हैः-

भाषांतरः इसमाइल बिन बिश्र ने कहाः हम हज़रत मक्की बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैह के प्रवचन के सभा में उपस्थित थे। आप ने फरमाया के हमें इमाम अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस वर्णन फरमाई, समारोह से एक अजनबी व्यक्ति कहने लगाः हमें बजाए अबु हनीफा के इब्न हज़म की हदीस वर्णन किजीए। तब इमाम मक्की बिन इब्राहीम ने जलाल कि स्थिति में फरमायाः हम असभ्यचार व बेअदब को प्रवचन नहीं देते, आप इस समय तक प्रवचन हदीस समाप्त कर दिया जब तक के इस को समारोह से ना निकाल दिया गया जब वह चला गया तो आप इमाम आज़म से मरवी अहादीस वर्णन फरमाने लगे।

(मनाखिब अल इमाम अल आज़म लिल मवखफ, जिल्द 1, पः 204)

इमाम आज़म के एक छात्र से सिहा सित्ता आदि में 2496 हदीस मरवी

इमाम आज़म के जलीलुल खद्र छात्र व मुहद्दीस (हदीस के विद्वान) अबदुर रज़्ज़ाख जिन के नाता सांसारिक ज्ञान जानती है के आप हदीस के ज्ञान में रखते थे। जिन से सिहा सित्ता सहीह बुखारी, सहीह मुसलिम, जामे तिर्मिज़ी, सुनन निसाई, सुनन अबु दाउद, सुनन इब्न माजह, व अधिक मुसनद अहमद बिन हंबल तथा सुनन दारमी, इन 8 पुस्तकों में 2496 रिवायात उपलब्ध हैं।

इस से इमाम आज़म के हदीस के ज्ञान में उत्तमता व उच्च स्तर का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। छात्र की यह शान है के बडे बडे मुहद्दिसीन इन के छात्र हैं। आईमा मुहद्दिसीन इन से हदीस लेते हैं तो अध्यापक व शिशक्ष कि ज्ञानी शान व प्रतिभा कया होगी।

(इमाम अबु हनीफा अल नुअमान मुहदिसा फी कुतुबुल मुहद्दिसीन, ल---नूर सुवैद---, पः 58)

इमाम आज़म के जिस छात्र व मुहद्दिस अबदुर रज़्ज़ाख से इस प्रकार अधिकता से रिवायात सिहा सित्ता (6 हदीसों के किताबें) आदि हदीस कि पुस्तकों में आई हैं वह खुद इमाम आज़म अबु हनीफा रद के --- हैं। हदीस का ज्ञान में इमाम आज़म कि यह शान व प्रतिभा है के इमाम बुक़ारी तथा इमाम मुस्लिम के अध्यापक और अन्य मुहद्दिसीन के अध्यापाक व शिक्षाक इमाम आज़म से हदीस रिवायत करते हैं।

इन्हों ने अपनी लिखित पुस्तकों में इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीसें रिवायत कि है।

इमाम आज़म ने किताब व सुन्नत के विरुद्ध कोई निर्णय नहीं दिया- शेक़ इब्न जज़म --- कि –

शेक़ इब्न जुज़म ज़ाहिरी ने भी इमाम आज़म के इस्तेदलाल के तरीक़े के सिलसिले में स्पष्ट रूप से वर्णन किया के आप किताब व सुन्नत के विरुद्ध कभी कोई निर्णय नहीं किया करते तथा ना सहाबा के लोकोक्ति के सिवा कोई राय व --- रखते थे। इन्हों ने इमाम आज़म के इस कथन का हवाला दिया है के आप ने कहा हैः-

भाषांतरः अल्लाह तआला ने जो नाज़िल फरमाया है वह सर आँखों पर है, और जो हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से मरवी है, उसे हम --- स्वीकार किए तथा पालन करते हैं और सहाबा किराम से जो अनेक लोकोक्ति – हैं, हम ने इन्हीं में से किसी कथन को अपनाया है तथा हम ने कभी इन के विरुद्ध नहीं किया तथा जो ताबाईन से --- है तो वह ताबअ हैं एवं हम भी ताबअ हैं। इस प्रकार आप ने ताबईन से अंतर को रवा रखा तथा यह सच्चाई है के इमाम आज़म ने सहाबा किराम का आदर व सम्मान करते हुए इन के कथन नज़र अंदाज़ करने को जाइज़ नहीं रखा।

(अल अहकाम ला बिन --, ---

अर्थात इ़माम आज़म कहते हैः-

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जो आदेश हम तक आए हैं वही हमारा सरमाया है। मुसतफा अलैहि सलातु सलाम कि सेवा के बाद मेरी कया मजाल व हिम्मत के अपनी राय को पेश करुँ। हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का आदेश सामने होता है तो सर झुका देता हुँ। --- मेरे माता-पिता आप पर क़ुरबान , मेरी कया मजा के --- भी अंतर कर सकुँ।

हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आदेश के सामने मैं ने अपनी पिशानी को क़म कर दिया इसी को सरमाया बनाया तथा इसी कि नीव पर मसले बता दिया। तथा जब सहाबा किराम अलैहि रिज़वान के लोकोक्ति आते हैं इन का सम्मान व आदर करते हुए मैं इसी में से एक कथन को अपनाया करता हुँ।

सहाबा के लोकोक्ति से हट कर किसी और कथन पर मसला नहीं बताता। यथा सब से प्रथम --- तो किताबुल्लाह है दुसरा --- मुसतफा अलैहि सलातु सलाम कि सुन्नतें। तीसरा – सहाबा किराम के --- हैं, यही इ़माम आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरमया है। इसी पर आप के मसाइ़ल कि नीव व बुनियाद है। आप के वर्णन हुए मसाइ़ल के दलीलें यही हैं।

फिर फरमाया लिप्यंतरणः- *वमा जा अ़न ग़ैरा हुम फहुमुर रिजाल वा नहनुह रिजाल* सहाबा किराम के अलावा किसी का सुझाव होता है, कोई बात खुद ताबइ़न ने वर्णन की होती है तो वह भी ताबइ़न हैं तथा मैं भी ताबअ़ई हुँ, जिस प्रकार इन्हों ने निवास किया है मैं भी निवास करता हुँ।

इमाम आज़म ने 83,000 मसाईल – किए

इमाम आज़म अबु हनीफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने धन्य जीवन के ज़ुहद व धर्मनिष्ठ, तहारत, भय व खौफ तथा कृपा में गुज़ारा, जिस के – अल्लाह तआला ने आप के सीने को फिक़्ह के ज्ञान के लिए खोल दिया था।

अल्लाह तआला ने आप को असाधारण बुद्धिमति कि क्षमता व शक्ति, इस्तेदलाल कि शक्ति तथा --- प्रदान की। आप ने खुद ही किताब व सुन्नत कि मजबूती से, 83,000 मसाइल – फरमाए हैं।

इमाम आज़म ने किताब व सुन्नत के सम्मुख कभी अपनी राय व सुझाव नहीं प्रस्तुत किया, बल्कि आप ने किताब व सुन्नत ही से मसाइल का समाधान निकाला है।

इमाम बुक़ारी कि --- करने वाले मुद्दिसीन ने भी फिक़्ह हनफी को मान्य माना है

हज़रत यहया बिन मुईन रहमतुल्लाहि अलैह विशाल मुहद्दिस (हदीस के विद्वान) तथा --- के अहकाम हैं उन का पाया ज्ञानी इस प्रकार विशिष्ठ था के इन के नाते से इमाम अहमद बिन हंबल रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः-

भाषांतरः जिस हदीस को यहया बिन मुईन नहीं जानते वह वास्तव में हदीस ही नहीं।

ऐसे विशाल मुहद्दिस इमाम आज़म के मसलक पर फतवा दिया करते थे, इनका वर्णन हैः-

भाषांतरः मान्य --- फिक़्ह इ़माम आज़म कि फिक़्ह है, इस पर मैं ने अपने दौर के मुहद्दिसीन को अ़मल करते हुए पाया है।

(वफियात अल अ़यान, हुर्फ उल नौन, अल इ़माम अबु हनीफा, अल वाफी बिल वफियात, हुर्फुन नौन, अल इ़माम अबु हनीफा, तारीक़ बग़दाद, बाबुल नौन, मनाखिब अबी हनीफा, हक़ीक़तुल फिक़्ह, जिल्द 2, पः 41)

इ़माम आज़म कि फिक़्ह को मान्य व --- घोषित देने वाेले यहया बिन मुईन इन हदीस के इ़मामों में से एक हैं जिन के सामने इ़माम बुक़ारी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक --- करने के बाद पेश की थी, जब इन्हों ने सन्तुष्ट किया तथा सनद --- दान फरमाई तब इ़माम बुक़ारी रहमतुल्लाहि अलैह ने इस को ज्ञान के बाजार में लाया।

जिस कि स्पष्टिकरण हाफिज़ इ़ब्न हज्र अ़सखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने --- फित्ह उल बारी में कही है। यदि इ़माम आज़म के पैरोकारों व मान्ने वालों को बिदअ़ती (), गुमराह या मुशरिक कहा जाए तो इमाम बुक़ारी पर – घोषित होगा के इन्हों ने गुमराह तथा बिदअ़ती --- मुहद्दिसीन से सहीह बुखारी में रिवायात ली हैं।

इस प्रकार इ़माम बुक़ारी एवं आप कि किताब कि – हैसियत भी --- हो जाती है. इस लिए महत्व --- देते हैं के इस प्रकार अंतर व --- का शिकार होने के बजाए अकाबीर पर सम्पूर्ण सन्तुष्ठि रखते हुए इन कि अनुसंधान व शोध से लाभ उठाया जाए।

यदि किसी को --- इमामों कि फिक़्ही शोध व अनुसंधान से निश्चिंता नहीं है तथा वह अपने शोध पर अमल व कर्म चाहता है तो वह अपने कर्म का ज़िम्मेदार है।

अर्थात जो लोग इमामों के वर्णन किए हुए क़ुरान व हदीस से --- फिक़्ही मसाइल व समस्या पर अमल कर रहे हैं इन्हें निशान मलामत --- ना बनाया जाए।

आज --- धर्म अनेक --- से इसलाम धर्म पर आक्रमण हो रहे हैं, सम्पूर्ण गुणों को जमा कर के इन के --- आक्रमण का उत्तर देना समय का महत्व मांग है। बजाए इस के अतः एक दूसरे के विरुद्ध – करना शरन भी श्रेष्ठतर नहीं एवं बुद्धिमता के रूप से भी श्रेष्ठ नहीं।

धर्म व उदारता के मांग पर कर्म करते हुए इस तरीक़े को --- तर्क कर देना चाहिए। अल्लाह तआला हमें अपने कर्म का – करने कि मार्गदर्शन प्रदान फरमाए। भलाई व अच्छाई को अपनाने तथा बुराई व खराबी से परहेज़ करने व दूर रहने कि मार्गदर्शन दान फरमाए।

आमीन

अनवारे-क़िताबत-08